Dr. Nutisri Dubey
Assistant Professor
Dept. of Philosophy
H. D. Jain College, Ara
U. G. IV
MJC-05 : Western Philosophy
(Locke - Refutation of Innate Ideas)

लॉक द्वारा जन्मजात प्रत्ययों का खंडन

लॉक ने अपने ज्ञान मीमांसीय सिद्धान्तों का प्रतिपादन करने के पूर्व देकार्त आदि बुद्धिवादियों के जन्मजात प्रत्ययों (Innate ideas) के सिद्धान्त का खण्डन किया है। यह उसकी ज्ञान मीमांसा का निषेधात्मक (खण्डन) पक्ष है। बुद्धिवादी दार्शनिक ज्ञान का स्वरूप सार्वभौम तथा अनिवार्य मानते हैं। इनकी मान्यता है कि मानव मन में कुछ तार्किक, अनिवार्य, सार्वभौम प्रत्यय होते हैं जो प्रारम्भ से ही अव्यक्त रूप में विद्यमान होते हैं। सम्पूर्ण मानव ज्ञान इन्हीं प्रत्ययों के संश्लेषण विश्लेषण आदि से विकसित होता है। किन्तु लॉक जन्मजात प्रत्ययों के सिद्धान्त को अस्वीकार करता है। उसके अनुसार मानव मन में कोई भी प्रत्यय जन्मजात नहीं हैं। हमारा सम्पूर्ण ज्ञान अनुभव से प्रारम्भ होता है और अनुभव में ही समाप्त होता है। उसने जन्मजात प्रत्ययों को निम्नलिखित युक्तियों से अस्वीकार किया है -

(1) लॉक का कथन है कि किसी भी प्रत्यय के विषय में सर्व-सम्मति नहीं पायी जाती। बच्चे, पागल और अशिक्षित व्यक्ति उन नियमो और प्रत्ययों को नही जानते हैं जिन पर सर्वसम्मति की बात कही जाती है। बच्चों और पागलों को ईश्वर का प्रत्यय और ज्ञान नहीं है। जिन लोगों के पास ईश्वर का प्रत्यय या ज्ञान है उनके भी ईश्वर भिन्न-भिन्न है। इससे स्पष्ट है ईश्वर का प्रत्यय और ऐसे ही अन्य प्रत्यय सर्वसम्मत नहीं हैं। वे अनुभवजन्य हैं।

(2) लॉक के अनुसार नियमों और प्रत्ययों की अनिवार्यता भी उनके जन्मजात होने का प्रमाण नहीं है। जो नियम या प्रत्यय अनि-वार्य बताये जाते हैं उनका तात्पर्य नहीं है कि वे जन्मजात हैं। उनका तात्पर्य यह है कि जब कोई मनुष्य वस्तुओं के स्वभाव के विषय में विचार करता है तो उन पर विचार करना पड़ता है और वह अन्यथा नहीं कर सकता है।

(3) लॉक के अनुसार स्वयंसिद्धता भी प्रत्ययों के जन्मजात होने का प्रमाण नहीं है। जिन प्रत्ययों एवं विचारों को स्वयंसिद्ध माना जाता है, वे सभी लोगों के लिए स्वयंसिद्ध नहीं है। पुन: वे किसी विशेष दृष्टि से स्वयंसिद्ध हैं, किन्तु अन्य दृष्टियों से स्वयंसिद्ध नहीं हो सकते। जैसे, आधुनिक ज्यामितिकारों ने यूक्लिड की ज्यामिति सम्बन्धी अनेक स्वयंसिद्धियों

को अस्वीकार कर दिया है।

(4) लॉक ने जन्मजात प्रत्ययों की अव्यक्तता का खण्डन किया है। उसके अनुसार ज्ञान अव्यक्त नहीं हो सकता। जो अव्यक्त है वह ज्ञान नहीं है। प्रत्यय मन में हों, किन्तु मन उनसे अनभिज्ञ हो यह असम्भव है। प्रत्ययों को जन्मजात मानने वाले लोग ऐसे ही व्याघात में फँसे हैं। उसके अनुसार मन वस्तुतः रिक्त है।

(5) लॉक शक्ति की युक्ति का सर्वथा खण्डन नहीं करता। वह मानता है कि आत्मा में कुछ मौलिक शक्ति है। वह आत्मा की मूल प्रवृत्तियों को जन्मजात मानता है किन्तु वह समस्त ज्ञान को आगन्तुक मानता है। वह ज्ञान को संवेदना, युक्ति और प्रातिभ ज्ञान द्वारा उपलब्ध बताता है और मानता है कि मनुष्य में संवेदना युक्ति तथा प्रातिभज्ञान प्राप्त करने की शक्ति है। यह शक्ति ज्ञानरूप नहीं है। यह भावना और क्रिया रूप है। इस शक्ति से ज्ञान उत्पन्न होता है। लॉक संवेदना, युक्ति और प्रातिभ ज्ञान के अतिरिक्त किसी चौथे प्रकार के ज्ञान को नहीं मानता। इस प्रकार लॉक बुद्धिवादियों के जन्मजात होने के

सिद्धान्त का खण्डन करता है।

इस प्रकार लॉक के अनुसार कोई प्रत्यय या ज्ञान जन्मजात नहीं है। हमारे समस्त ज्ञान का स्रोत हमारा इन्द्रियानुभव है। हमारा मन जन्म के समय कोरे कागज, अंधेरे कमरे और साफ स्लेट के समान है जिस पर पहले से कुछ भी अंकित नहीं है। अनुभव रूपी सूर्य अपनी संवेदन और स्वसंवेदन (Sensation and reflection) रूपी अंगुलियों से इस पर ज्ञान रूपी प्रकाश पहुँचाता है। हमारे ज्ञान का आरम्भ और पर्यवसान इन्द्रियानुभव में होता है।